विनायिकायै नमोनमः। विनायकाय नमोनमः।

<u>जगदानन्दकारक</u>

दक्षिण के शास्त्रीय-सांस्कृतिक गायन-वादन (Carnatic music)में श्री त्यागराज जी का माहात्म्य कुछ कम नहीं जान पड़ता। उनकी प्रतिभा गायन में ही नहीं अपितु उनकी रामभक्ति में भी दिखती है। जानने में तो यह भी आया कि इनकी २४००० कृतियाँ थी और इन्हें मुनि नारद जी का आशीर्वाद भी प्राप्त था। सम्भवतः यह प्रसङ्ग इनकी रामभक्ति और गायन के चातुर्य -दोनों-को दिखाता है।इसलिये हिन्दी पाठक-पाठिकाओं के समक्ष उनकी जो संस्कृत-कृति मैं जानता हूँ ,'जगदानन्दकारक', वो प्रस्तुत हो।

पाठक-पाठिकायें इण्टर्नेट् (internet)पर श्रीमती एम्०एस्०सुब्बुलक्ष्मी जी का 'जगदानन्दकारक' का गायन अथवाऔर त्यागराज-आराधना(प्रायः एक वार्षिकी उत्सव)१९९४ का 'जगदानन्दकारक' सुनें और शास्त्रीय सङ्गीत को जानने की कोशिश करें (और उसका आनन्द लें)।

प्रायः मैंने जगदानन्ददकारक को उसके पाठान्तर,अर्थ (आशय) और अपनी कल्पना के साथ लिखने का,अपने सामर्थ्य से, प्रयास किया है। सम्भव है कि कुछ-चरणम् आगे-पीछे हो। त्रुटि हो तो विवेक के साथ क्षमा करें और शोधन-सुधार करने की कृपा करें।

<u>त्यागराज जी को नमस्कार</u>

रागम्----नाट

पल्लवी------ **जगदानन्दकारक**
जय जानकीप्राणनायक
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे जगत् को आनन्दित करने वाले!हे जानकी के प्राणों के नायक!(तुम्हारी)जय(हो)!!!
[हे जगदानन्दकारक!]

<u>ध्यान:</u> 'जगदानन्दकारक' इतना सुनने-पढ़ने से भगवान् श्रीमर्यादापुरुषोत्तम राम का उनके चरित्रसहित उनका मनोकल्पित-चित्र ध्यान में आये- वे कृष्णवर्ण राम,घुँघराले घने बालों वाले, धनुष-बाण लिये अभय/आशीर्वाद की मुद्रा बनाये खड़े हुये हैं।

जब-जब 'जगदानन्दकारक' सुनें, तब-तब भक्तिमय-आनन्द की लहर उमड़ पड़े और सारे-कष्ट दूर हो जायें; धर्म ,भक्ति और सत्य-ज्ञान का उत्थान हो जाये।

'जय जानकीप्राणनायक' इतना सुनने-पढ़ने पर श्री राम जी से अभिन्न रमा- सीता भगवती जी ध्यान में आयें- कैसे खुलें-केशों वाली जानकी सीता जी ,धूल-लिपटे पीले-वस्त्र पहने, कुछ-भय और ज़्यादा-साहस के साथ दृढनिश्चय(या {प्रायः राम जी पर}दृढविश्वास) से रावण को उसकी अभीप्सा पूरी करने से मना कर रही हैं(या फटकार रही हैं)।जब-जब 'जय जानकीप्राणनायक' सुनें ,तब-तब सीता जी ,इस ही तरह-से ,ध्यान में आयें और फिर सीता-रामजी दोनों ध्यान में आयें।

अनुपल्लवी ----**गगनाधिपसत्कुलज राजराजेश्वर**
सुगुणाकर सुरसेव्य भव्यदायक सदा सकल

[जगदानन्दकारक जय जानकीप्राणनायक]

<u>आशय</u>: हे गगन के अधिपति (भगवान् सूर्य) के सत्कुल में जन्म लेनेवाले (अथवा - हे गगन के अधिपते! हे सत्कुल{सूर्यवंश/मनुवंश/रघुवंश}में जन्म लेनेवाले!) हे राजराजेश्वर! हे सुगुणों के स्रोत (अथवा - सुगुणों की दूसरे लोगों में उत्पत्ति-वृद्धि के कारण/सुगुणों के भण्डार) हे सुरों के द्वारा सेवित होने योग्य! सभी को सदा ही भव्य (जो होने योग्य है) देने वाले! हे जगदानन्दकारक! हे जानकीप्राणनायक! (तुम्हारी)जय(हो)!

<u>ध्यान:</u> 'गगनाधिपसत्कुलज' के पठन-श्रवण से भगवान् भुवनभास्कर-सूर्य ध्यान में ज़रूर आयें, फिर धीरे-धीरे मनुवंश और रघुवंश ध्यान में आयें (जिसमें राजा दशरथ भी ध्यान में आयें) और फिर काकुत्स्थ राम जी तो अवश्य ही ध्यान में आयें।

'राजराजेश्वर' के पठन-श्रवण से सिंहासन पर विराजमान कनक से भूषित पीले-वस्त्रों वाले राजा राम ध्यान में आयें और 'सुगुणाकर' के श्रवण-पठन से घुँघराले-बाल वाले कृष्णवर्ण-श्रीराम ,आशीर्वाद देते हुये ,ध्यान में आयें।
'सुरसेव्य भव्यदायक सदा सकल' के पठन-श्रवण से उनकी कृपानुभूति पानेवाले भक्तों के चरित्र और उन भजन-करते हुये भक्तों के चित्र ध्यान में आयें।

चरणम्१---**अमरतारकनिचयकुमुदहित**
परिपूर्णानघ सुरासुरपूज
दधिपयोधिवासहरण
सुन्दरतरवदन सुधामयवचोवृन्द गोविन्द सानन्द
मावराजराप्त शुभकरानेक
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे देवताओं-रूपी तारों के लिये कुमुदों के हितैषी (चन्द्रमा)! (अगर देवता तारें हैं तो श्रीरामचन्द्रजी चन्द्रमा है!) हे(अपने में)परिपूर्ण! हे अनघ! हे सुर असुर दोनों से पूजित! हे (कृष्ण-रूप में) दधि, पयोधि और वस्त्र का हरण करनेवाले! हे श्रेष्ठ मुखाकृति वाले! अत्यंत मधुर वचन बोलने वाले! हे गोविन्द (गौओं के अधिनायक)! सच्चे आनंद से युक्त! हे मावर (लक्ष्मीपति)! हे सदा यौवन से पूर्ण, भक्तो का शुभ करने वाले! हे जगदानन्दकारक!

<u>ध्यान:</u> 'अमरतारकनिचयकुमुदहित परिपूर्णानघ सुर सुरभूज' इतना सुनने-पढ़ने से अनेकानेक देवताओं के बीच सूर्य/चन्द्र से भी ज़्यादा प्रतिभा और कान्ति वाले जगत्परमेश्वर परात्पर राम, जिनसे भक्ति की अनवरत/अजस्र मूसलाधार-वर्षा सभी-दिशाओं में हो रही है, और जो सभी के लिए वर-मुद्रा बनाए हुये हैं, ध्यान में आयें। इस ध्यान में उनको सुन्दर-कल्पवृक्ष के रूप में भी देखें।

'दधिपयोधिवासहरण' के पठन-श्रवण से ध्यान में श्रीमर्यादापुरुषोत्तम के साथ-साथ (उनसे अभिन्न) श्रीलीलापुरुषोत्तम कृष्ण को लायें- भगवान् का ऐसा चतुर्भुज-विग्रह जो दो हाथों में बांसुरी और बाकी दो में धनुष-बाण लिये हुये हैं(भगवान् राम और कृष्ण का ऐक्य)।

'सुन्दरतरवदन'के पठन-श्रवण से भगवान् राम के सुन्दर मुखमण्डल का ध्यान करें- वे कृष्णवर्ण है, मन्द-मुसकान उनके सुन्दर ज़रासे-उभरे ओठों पर है जिसके ऊपर बहुत-ही हल्की मूछें दिखाई पड़ रही हैं,उनकी आँखें हल्की-सी बन्द हैं और काली-भृकुटियाँ नासिका के ऊपर धनुष की तरह मिल रही हैं, उनका मुखमण्डल दायें-बायें और ऊपर की ओर से बहुत-ही-घुँघराले चमकदार(भगवान् के वर्ण से ज़्यादा) काले बालों से घिरा हुआ है ,जिन्होंने कंधों को ज़रा-सा ढक रखा हैं और कानों को अपूर्ण-रूप से छिपा रखा हैं,ओज और तेज से भरी दृष्टि प्रतिभामयी है, बायें-कन्धे पर बाणों का तरकस है और बायें-हाथ में धनुष हैं ; दायें कन्धे पर पीला-स्वर्णिम

वस्त्र ,जो प्रायः कमर के बायीं-ओर जाता होगा, धारण करनेवाले द्विभुज भगवान् निश्चिंत हैं और दायें-हाथ से आशीर्वाद की मुद्रा बनाये हैं।

'सुधामयवचोवृन्द' के पठन-श्रवण से लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण(बालरूप में) ध्यान में आयें- नन्हें नन्दनन्दन बालगोपाल जी एक-हाथ में मक्खन-मिस्री लिये और दूसरे से पीछे-खड़ी गाय(जो उनको जीभ से चाट-कर दुलरा रही है) का थन पकड़ कर दूध पीने की चेष्टा कर रहे हैं; वे मीठे-ओठों से बालभावमयी मीठी-बातें भी बोल रहे हैं।

'गोविन्द' के पठन-श्रवण से ध्यान करें कि किशोर (१६-१८वर्ष के) कृष्णजी गर्दन-घुमाये-झुकाये गाय- जो भगवान् के चरण चाट रही है- के आगे, उससे टिककर, त्रिभङ्गी-मुद्रा में पीले-वस्त्र पहने वंशी बजा रहे हैं। 'सानन्द' के पठन-श्रवण से भगवान् कृष्ण के मुसकान-भरे मुखमण्डल का उसी तरह ध्यान करें जैसे ऊपरोक्त तरीक़े-से रामजी के मुखमण्डल का ध्यान किया ,बस धनुष-बाण और वर-मुद्रा हटाकर एक-बांसुरी दायें-हाथ में पकड़ा दीजिये और बायें-हाथ को लाठी(या गाय) पर टिका दीजिये, एक कम्बली भी कन्धों पर टिका दें और चरती हुई गायों को भी ध्यान में लाये।

'मावराजराप्त शुभकरानेक' के पठन-श्रवण से रामजी से अभिन्न भगवान् कमलाकान्त चतुर्भुज विष्णु और उनसे अभिन्न भगवती लक्ष्मी ध्यान में आयें ,जिन्हें आदित्यों, रुद्रों, वसुओं, मरुद्गणों,देवियों आदि ने घेर-रखा है और वे सब उन दोनो को सिर-झुकाकर प्रणाम कर रहे हैं, उनकी वन्दना कर रहे हैं; कनकाभूषण से भूषित (रक्तवस्त्रा) लक्ष्मी-(पीतवस्त्र)विष्णु जी भी सब ही लोगों को आशीर्वाद की मुद्रा दिखाते हुये कृपा कर रहे हैं। यहाँ पर भागवतों को भी याद करें।

चरणम्२----**निगमनीरजामृतजपोषकानिमिषवैरिवारिदसमीरण**
खगतुरङ्ग सत्कविह्रदयालयागणितवानराधिपनताङ्घ्रियुग
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे वेद-रूपी कमल से निकले अमृत के पोषक! हे देवताओ के शत्रुओं का उसी प्रकार छिन्न-भिन्न करने वाले जैसे तूफ़ान बादलों को कर देता है! हे खग ('ख' यानि कि गगन तो गगन में गमन करनेवाले, यहाँ पर 'गरुड') पर (आरूढ हो) तेज़ी से गमन करनेवाले! हे सत्कवियों के ह्रदय(रूपी)आलय में बसने वाले! (हे सत्कवियों के चिन्तनीय!) जिनके चरणों पर अनगिनत-वानरोंके अधिपति सुग्रीव नतमस्तक हैं, हे जगदानन्दकारक!

चरणम्३----**इन्द्रनीलमणिसन्निभापघन चन्द्रसूर्यनयनाप्रमेय**
वागीन्द्रजनक सकलेश शुभ्रनागेन्द्रशयन
शमनवैरि सन्नुत
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे इन्द्रनील-मणि के समान शरीरकी आभा वाले! हे चन्द्र और सूर्य(रूपी) नेत्रों वाले! (भगवान् के विश्वरूप को याद करें) हे अप्रमेय{जिसे मापा न जा सके}! हे वागीन्द्र (ब्रह्मा) के जनक! हे सकल(जगत्)के ईश्वर! हे (साफ़)सफ़ेद नागेन्द्र (शेषनागजी) पर शयन करनेवाले! हे मृत्यु के वैरी (शिव) के द्वारा नमस्कृत! हे जगदानन्दकारक!

(यहाँ 'वागीन्द्रजनक' का अभिप्राय शायद पद्मनाभ जी से है जबकि मैं इसका अर्थ लव-कुश को मानता हूँ और 'वागीन्द्रजनक' का अर्थ लवकुशजनक राम जी को मानता हूँ)

ध्यान: 'इन्द्रनीलमणिसन्निभापघन चन्द्रसूर्यनयनाप्रमेय' के पठन-श्रवण से जो ध्यान रामजी के मुखमण्डल का पहले बताया,वो उनके पूरे शरीरविग्रह के साथ दुबारा करें बस इस बार उनके दायें हाथ को कमर पर टिका दें और इस ही हाथमें एक बाण पकड़ा दें।उन्हें पीली-धौती पहना दें,उन्हें आभूषणों से रहित और नंगे-पाव देखें - उनके नख और अंगुलियों सहित चरणों का ध्यान करें; उनके काले-करकमलों का अंगुलियों सहित ध्यान करें - उनकी भुजाएँ भी मन को भानेवाली हैं।उनके वक्षःस्थल को दायीं ओरसे आये हुए पीताम्बर ने ढक रखा है जो कि कमर के बायीं ओर जाता है; उनके सभी अङ्गों के आकार-विकार सुन्दर जान पड़ते हैं।

रामजीके दाहिनी ओर उनसे अभिन्न भगवती सीताजी का ध्यान करें- वे कुम्भकुचा भगवती लाल-वस्त्र पहने हैं, उनकी ओढ़नी दायें-कन्धे से होकर कुचमण्डल को ढकते हुए बायें कन्धे की ओर जाती है।उनका दायां-हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में है और बायां-हाथ वर-मुद्रा में है; उनके दोनों-भुजाओं की मुड़ावट एक जैसी है और दोनो खुली-हुई हथेलियां आपस-में एक-दूसरे से कुछ-ही दूरी पर कुचमण्डल के आगे हैं।हस्तपल्लव बहुत सुन्दर है (विस्मय हो सकता है कि सीता जी के स्वरूप भगवती महालक्ष्मी ने इन्हीं हाथों से महिषासुर का वध किया था)।

उनका मुखमण्डल उज्जवल है और केश भी सीधे-सुलझे खुले हुए हैं; केश की दो-पट्टियां कान के आगे-से होकर उन-कानों को हल्का-सा ढखते हुए कंधे के नीचे और कुचों के ऊपर तक जाती हैं , बाकी के केश कानों के पीछेसे होकर पीठ की ओर जाते हैं। उनका वदन पूरी तरह-से प्रसन्न होकर खिलकर मुस्कुरा रहा है; उनकी आँखें ज़रा-सी खुली हैं, नाक बहुत -ही सुन्दर लगती है और भृकुटियाँ भी (बिना आपस में मिले) बहुत-ही सुन्दर-सटीक लगती हैं। उनका रङ्ग स्वर्णका सा है और वे हल्का-सा झुकी हुई हैं।

रामजी के सामान वे भी आभूषणों से रहित और नंगें-पाव हैं ;इस तरह-से उनके भी सुन्दर-चरणों का ध्यान करें।उनका पेट हल्का-पतला पर स्वस्थ है, हल्के-चौड़े नितम्ब आदि का आकार भी बाकी शरीर की भाँति सुदृढ़-सुन्दर है। उनकी ऊँचाई अच्छी है पर रामजी से कम है, लेकिन प्रतिभा में रामजी से कमी तो बिल्कुल भी नहीं है - माता का वात्सल्य उनकी दृष्टि में दिखता है- मानो जैसे वे दर्शकों/ध्यानियों को बच्चा-बच्ची मानकर मीठी-बातों से उन्हें खिला रही हों।

रामजी के बायीं ओर उनके भाई लक्ष्मण जी है जो शरीर विग्रह से राम जी की तरह हैं पर गोरे लगते हैं, कद में लक्ष्मणजी रामजी से कम हैं। यद्यपि वे राम जी की तरह मुस्कुरा रहे हैं तो भी उनके मुखमण्डल पर हल्का-सा वीर-रस दिखाई पड़ता है; बाकी सब तरह से वे राम जी की तरह है, यहाँ तक कि(आभूषणों से रहित होकर) उन्होंने कपड़े भी राम जी की तरह पहने हैं बस वस्त्रों का रङ्ग पीले की जगह स्वर्णिम हैं। इनके भी कोमल-चरणों को ध्यान में लायें।

'वागीन्द्रजनक सकलेश' के पठन-श्रवण से कनकाभूषित राजा राम अपने पुत्रों-सहित ध्यान में आयें - लव-कुश दोनो भाई बालरूप के लक्ष्मण-राम जी की तरह लगते हैं।

'शुभ्रनागेन्द्रशयन शमनवैरि सन्नुत' के पठन-श्रवण से भगवान् शेषशायी पद्मनाभ पुरुषोत्तम ध्यान में आयें - दूध के समुद्र पर तैरता एक सफ़ेद ,कई मुखों वाला ,लम्बा-सा नाग है जिसके शरीर पर नीचे की ओर हल्की-पतली पीली-स्वर्णिम धारियाँ और ऊपर की ओर छोटे-गोल और अण्डाकार धब्बें हैं, उसने अपने शरीर को कई तरह-से कई-बार मोड़कर एक बिछौना बना दिया है और उसकी पूछ स्पष्ट समुद्र पर तैरती-हुई दिखाई देती है। उसके शरीर के इस बिछौने पर भगवान् कृष्णवर्ण चतुर्भुज विष्णु शयन कर रहे हैं।

भगवान् विष्णु आगे के दायें हाथ से सिर और अपने गाल को टिकायें हैं, पीछे का दायाँ हाथ अँगड़ाई में सीधा थोड़ा-ऊपर उठकर फैला हैं, आगे का बायाँ हाथ कमर पर टिक कर मुड़े-हुये बायें-घुटने पर है और पीछे की बायीं भुजा ,कोहनी-मोड़े और हथेली-खोले ,नाग पर टिकी हुई है ; दायीं-भुजा पर पीताम्बर लिये, घुँघराले-खुले-बालों वाले, पीली-धौती पहने भगवान् विष्णु इकदम शान्त-प्रसन्न होकर नेत्र-बन्द किये योगनिद्रा-तन्द्रा में तल्लीन है, उनके दायें-उरःस्थल पर उन्हीं के हाथ से छूटा कमल सटा-टिका हुआ है , उन्होंने आभूषण शयन-समय में

नहीं पहने हैं और उनका दायाँ-पैर नाग के उठे हुए शरीर के कारण थोड़ा-ऊपर उठकर (नागमय)बिछौने के ज़रा-सा बाहर जा-रहा हैं, इसीलिये उनके चरण पर थोड़ा-सा दूध और फ़ेन आ रहा है।

नाग भी अपने शरीर के अलग-अलग हिस्सों को इधर-उधर हिला कर भगवान् की पीठ की हल्की-सी मालिश कर रहा है, उसके कई मुखों ने भगवान् के बायें-कन्धे से लेकर दोनों-चरणों तक शरीरके किनारे को हल्का-सा आवृत कर रखा है और अपने मुख को ऊपर-नीचे हिला कर भगवान् की किनारे की त्वचा को धीमे-धीमे दबा कर उनको आराम दे रहा है, भगवान् के मुख और बालों को वो नहीं छू रहा, बस (बालों के) किनारे कई-मुखों को गोलाकार करके उनपर छाया बना रहा है ।

भगवान् की नाभी से एक कमलनाल निकला है जो कि भगवान् के दायीं ओर जाकर समुद्र की ओर बढ़ा है और जिसपर एक बड़ा-सा कमल खिला है जो कि समुद्र पर तैर रहा है ; इस कमल पर कमलासन लगायें ,विष्णुजी से अभिन्न ,कमलज चतुर्मुख ब्रह्मा जी यौवनावस्था में ध्यानस्थ होकर बैठे हैं(जैसे भगवान् बुद्ध), इनका वर्ण पीला और वस्त्र लाल हैं , इनका चेहरा लम्बा है जिस पर ओठ हल्के गुलाबी-पीले हैं और सिर के केश छोटें हैं ,इनके दाढ़ी-मूछ कुछ भी नहीं हैं, इन्होंने स्वर्णिम-आभूषण पहने हुये हैं और इन्होंने पीछे के दोनों हाथों में कमल लिया हुआ है ; इनके भी पैरों के तलवे का ध्यान करें। ये परमेश्वर विष्णु नारायण जी, ब्रह्मा जी और नागेंद्र जी समुद्र में इकदम अकेले हैं - इस तरहसे इन सबका ध्यान करें।

चरणम्४----**पादविजितमौनिशाप**
सवपरिपाल वरमन्त्रग्रहण लोल
परमशान्तचित्त जनकजाधिप
सरोजभववरदाखिल
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे पैर-से मुनि-जी के शाप को जीतनेवाले! हे यज्ञ के परिपालक! हे विश्वामित्र से वरमंत्रादि ग्रहण करने में उत्सुक! (अहल्योद्धार, ऋषियों के यज्ञ के मारीचादि से रक्षण, गुरु-सेवा की कथाएं ध्यान में आयें)
हे परमशान्त-चेतना वाले! हे जनकजा के अधिपते! हे कमल से(उद्)भूत ब्रह्माजी को वर देने वाले! हे अखिल(विश्वस्वरूप)! हे जगदानन्दकारक!

<u>ध्यान:</u> इस पूरे चरणम् के पठन-श्रवण के समय में सीताराम जी के चरणों का ध्यान करें और भगवती-भगवान् के पूर्णतः शरणागत हो जायें, ध्यान में ही उनके पैरों पर गिर पड़ें।

चरणम्५----**सृष्टिस्थित्यन्तकारकामित कामितफलदासमानगात्र**
शचीपतिसुताब्धिमदहरानुरागरागराजितकथासारहित
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे सृष्टि, स्थिति और अन्त के कारक! हे अमित (जिसको मापा न जा सके)! हे कामित-फल देने वाले! हे असमान गात्र (चाल या पहुँच का तरीका) वाले (अर्थात जिनके समान कोई नहीं है) हे शचीपति{इन्द्र} के पुत्र वालि और समुद्र के मद को हरने वाले! हे अनुराग और राग से राजित-कथा (रामायण) के सार (हे रामायण का अर्थ/सार अपनी कृपा से प्राप्त कराने वाले!) हे जगदानन्दकारक!

<u>ध्यान:</u> यहाँ पर भजन-गायन में पूरी तरह-से तल्लीन हो जायें; ऐसे हो जायें जैसे 'नासदीय सूक्त' में प्रलय की स्थिति का वर्णन हो (ऐसा मुझे ध्यान है कि प्रलय में सत्-असत् दोनो नहीं रहते)। परम शांति !

चरणम्६----**सज्जनमानसाब्धिसुधाकर**
कुसुमविमानसुरसारिपुकराब्जलालितचरणावगुणासुरगणमदहरण
सनातनाजनुत
[**जगदानन्दकारक**]

आशय: हे सज्जनों के मानसरूपी समुद्र के लिए सुधाकर अर्थात् चन्द्र-स्वरूप! (चन्द्र के कारण ही समुद्र में लहरें उठती हैं, इसलिए यहाँ पर ये भाव लायें कि श्रीरामचन्द्र की भक्ति की लहरे ह्रदय में उठ रही हैं) हे पुष्पक-विमान और सुरसा के रिपु (हनूमान् जी) के करकमलो-द्वारा लालित चरणों वाले! हे असुरगण-रुपी अवगुणो के मद का हरण करनेवाले! हे सनातन! हे अजन्मा{ब्रह्मा} के द्वारा नमस्कृत! हे जगदानन्दकारक!

ध्यान: यहाँ पर भगवदाश्रित-भक्तों एवं साधु-संतों (प्रह्लाद, द्रौपदी, व्यास, भरत ,आदि-शंकराचार्य आदि) को उनके चरित्रों सहित ध्यान में लाकर धर्म की जीत और अधर्म के नाश का ध्यान करें - धर्म-स्वरूप ह्रष्ट-कृष्ट-पुष्ट ,पर संतुष्ट नन्दी-वृषभ दुष्ट-रुष्ट कष्टदायी अधर्म को युद्ध में कुचल रहा है। ये निर्णय लेलें कि अब आपका जीवन धर्म,धर्मज्ञता,भक्ति और सत्य-ज्ञान के लिये है।

चरणम्७----**ओङ्कारपञ्जरकीर पुरहर सरोजभव केशवादिरूप**
वासवरिपुजनकान्तक
कलाधर कलाधराप्त
घृणाकरशरणागतजनपालन
सुमनोरमण निर्विकार निगमसारतर
[**जगदानन्दकारक**]

आशय: हे ओङ्कार(रूपी)पिञ्जड़े के तोते (अर्थात ओमकार के नाद में निहित)! हे (रुद्र-स्वरूप में) पुर (त्रिपुरासुर) को हरने वाले! हे सरोज से उत्पन्न (प्रजापति ब्रह्मन्)! हे केशव !हे वासव{इन्द्र}के रिपु (इन्द्रजित्) के जनक (रावण) का अंत करने वाले! हे कलाधर! हे कलाधर शिव को प्रिय! हे घृणित(लोगों को भी) शरणागत-जन (के रूप में उन)का पालन करनेवाले! हे आसानी से मन के लिये रमणीय! हे निर्विकार (विकारों से रहित)! हे निगम (वेद) के सार से तर-देनेवाले (अर्थात वेदके सार-रूपी भगवान् जिनको पा लेने से वेदों का ज्ञान स्वतः ही हो जाता है)!
हे जगदानन्दकारक!

ध्यान: गायन को ही ओङ्कारमय मान लें।अब राम जी से अभिन्न शिवजी का ध्यान करें। परमेश्वर शिव बहुत-ही गोरे है, उनके गुलाबी-ओठ मुस्कुरा रहे हैं जिनके ऊपर भूरी-मूछें हैं और ठुड्डी(और उसके नीचे के)भाग को दाढ़ी ने ढक रखा है।उनके भूरे-केशों की जटा है जिस पर चमकीला-चन्द्रमा टिका हुआ है और भूरी-भृकुटियाँ हैं, जटा से गङ्गा-जल निकल रहा है जो कि शिव जी के दायीं और बायीं ओर जाकर ऐसा जान पड़ता है जैसे कोई मुकुट की तरह का भूषण हो।उनकी इकदम शान्त और ह्रष्ट-कृष्ट कान्ति है। चर्म पहने, पद्मासन लगायें ध्यानस्थ शिव जी का ध्यान करें।यह भी ध्यान करें कि कैसे शिवजी रामजी के द्वारा पूजित हुये थे।शिवलिङ्ग के अभिषेक और पूजन-आरती का भी ध्यान करें और लिङ्गसे दर्शन देनेवाले, खड़े-हुये शिव जी की शान्ति और मुस्कुराहट को ध्यान में लायें और प्रसन्न हो जायें। शिव-राम से अभिन्न रामदास हनूमान् जी का भक्त-वेष और वीर-वेष ,दोनों, में ध्यान करें - वानरस्वरूप भक्तस्वरूप भगवान् आञ्जनेय के सुन्दर-शरीर पर स्वर्णिम-रोम हैं और मुँह लाल हैं, पैर की अङ्गुलियाँ भी हाथ की अङ्गुलियों की तरह सक्षम हैं ; हथेलियाँ,पैर के तलवे ,अङ्गुलियाँ , गुलाबी-लाल-उरःस्थल रोमरहित हैं और पेट, वक्षःस्थल पर सफ़ेद-रोम हैं। इनकी स्वर्णिम-रोम वाली पूछ लम्बी और घुमावदार हैं। वीर-वेष में वानरवीर हनूमान् जी चट्टान-लेकर युद्ध कर रहे हैं या पञ्चमुख बहुबाहु होकर ,विभिन्न तलवार,गदा आदि अस्त्र-शस्त्रोंको लेकर, (शत्रुओं को)युद्ध के लिये

ललकार रहे हैं और सिंह की तरह दहाड़ रहे हैं; भक्त-वेष में द्विभुज होकर हाथ जोड़कर बालभाव से सीता-राम जी के सम्मुख बैठें हुये हैं।

चरणम्८----**करधृतशरजालासुरमदापहरणावनीसुरसुरावन**
कवीनबिलजमौनिकृतचरित्रसन्नुत श्रीत्यागराजनुत
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे कर में शर (बाणों) के जाल को धारण करने वाले! हे असुरों के मद को(अपने पराक्रम से)अपहृत{नाशित} करनेवाले! पृथ्वी के सुरों (ज्ञानीजन, ब्राह्मण आदि) और देवो की रक्षा करने वाले! हे कवियों में अग्रिम,बिल से निकलने वाले मुनि वाल्मीकि-द्वारा कृत रामायण से सन्नुत! हे श्री त्यागराज द्वारा नुत! हे जगदानन्दकारक!

<u>ध्यान:</u> अब भगवान् राम-लक्ष्मण जी के वीरवेष का ध्यान करें। वानरों से घिरे दोनों लोग शरवर्षा कर रहे हैं।कमर-कन्धें पर वल्कल धारण किये, बिना कवच-कुण्डल के, सिर्फ़ धनुष-बाण लेकर, जटा बनाकर राम जी का कुम्भकर्ण के साथ युद्ध हो रहा है; वे अपने बाणों से उसके हाथ-मुँह काटकर गिरा रहे हैं। लक्ष्मणजी दूसरे राक्षसों को इसी-तरह-से बाणों से काट रहे हैं। वीर-वानर कवचकुण्डलधारी,अस्त्रशस्त्रधारी-राक्षसों से चट्टान के द्वारा युद्ध कर रहे हैं। राम-रावण युद्ध का ध्यान करें - रथी रामजी और रथी लोकरावण रावण का युद्ध हो रहा है, दोनों रथ इधर-उधर आगे-पीछे दौड़ रहे हैं और दोनों-लोग बाणों की एक-दूसरे पर वर्षा कर रहे हैं और तब ही सारथी की प्रेरणा से ब्रह्मास्त्र के द्वारा राम जी ने रावण की छाती छेद डाली।

चरणम्९----**पुराणपुरुष नृवरात्मजाश्रित**
पराधीनखरविराधरावण
विरावणानघ पराशरमनोहराविकृत
त्यागराजसन्नुत
[जगदानन्दकारक]

<u>आशय</u>: हे पुराणपुरुष! (पद्मपुराण में पुराणपुरुष के रूप का वर्णन है जिसमें सब पुराणों को पुरुषमय शरीर के विभिन्न-अङ्गों के रूप में दिखाया हैं) हे नरों में वरणीय दशरथजी के पुत्र (अथवा- हे नृवर{जनक} की पुत्री{सीता} के प्रिय!) अपने भक्तो के वश में रहने वाले! हे खर,विराध,रावण का विनाश करने वाले! हे अनघ! हे पराशर जी के प्रिय! हे अविकृत{अर्थात् जिसमें विकार न हुआ हो}! हे त्यागराज द्वारा सन्नुत! हे जगदानन्दकारक!

<u>ध्यान:</u> 'पुराणपुरुष नृवरात्मजाश्रित' के पठन-श्रवण से सब पुराण ध्यान में आयें और परमपुरुष विष्णुजी भी ध्यान में आयें और दोनों को अभिन्न देखें। 'पराधीनखरविराधरावण विरावणानघ' के पठन-श्रवण से भगवान् के वीरवेष, जिसका वर्णन पहले ही हो चुका है, फिरसे ध्यान आये। 'पराशरमनोहराविकृत त्यागराजसन्नुत' के पठन-श्रवण से वल्कलवस्त्रधारी सीता-राम-लक्ष्मण जी का विभिन्न ऋषि-मुनियों (अनसूया-अत्रि, अगस्त्य आदि) से मिलन का ध्यान करें।

चरणम्१०---**अगणितगुण कनकचेल**
सालविदळनारुणाभसमानचरणापारमहिमाद्भुत सुकविजनहृत्सदन#

सुरमुनिगणविहितकलश नीरनिधिजारमण
पापगजनृसिंहवर त्यागराजादिनुत
[जगदानन्दकारक जय जानकीप्राणनायक]

<u>आशय</u>: हे अनगिनत-गुणों वाले! हे कनक-वर्ण के वस्त्र पहनने वाले! हे साल-वृक्षों का विदलन करनेवाले! हे अरुणदेव के समान-आभा के चरणों वाले! हे अपार और अद्‌भुत महिमा वाले! हे सुकवि-जनों के हृदयको अपना सदन बनाने वाले! हे सुरों और मुनिगणों का हित करने वाले! हे नीरनिधि समुद्र की पुत्री लक्ष्मीदेवी के साथ रमण-करनेवाले! हे पाप-रूपी गज के लिए नृसिंह स्वरूप! हे त्यागराज आदि दिग्गजों द्‌वारा पूजित!

हे जगदानन्दकारक! हे जानकीप्राणनायक!(तुम्हारी)जय(हो)!

<u>ध्यान:</u> यहाँ पर पूरी-रामायण ध्यान में आयें अवतार-लीला की शुरुआत। रामलक्ष्मण जी द्‌वारा विश्वामित्र जी की सेवा और ताटका आदि के साथ युद्‌ध; सीता-राम जी का वैवाहिक-रमण के बाद, राज्याभिषेक की जगह, प्रियलक्ष्मण-सहित वनवास; नगर-नागरिकों का वियोग; लक्ष्मण-विलाप; भक्त-भरत-कथा; दशरथ जी की मृत्यु का दुःख; विराध-आक्रमण -सीता जी का पहला-अपहरण; विराध-वध; शूर्पणखा का आगमन और उससे सीता को भय; खर-दूषण के साथ युद्‌ध; सीता जी का लक्ष्मण जी को बुरा सुनाना और लक्ष्मण जी का विलाप; रावणकृत सीता-अपहरण; सीता-रक्षण में तत्पर जटायु जी के पंख कटना; रावण द्‌वारा सीता जी के बाल खींच कर अपहरण; सीता जी का आभूषण गिराना; सीता जी की दृढता; समुद्र-पार लङ्का में सीता जी की दशा; राम जी की सीता-अन्वेषण में विफलता; राम जी का विलाप और लक्ष्मण जी का भी चिन्तित होना; राम जी का जटायु से वियोग; रामजी की दृढता; राक्षसी द्‌वारा लक्ष्मण-राम जी के साथ दुर्व्यवहार; कबन्ध-बन्धन में लक्ष्मणराम जी; शबरी-मिलन; दुर्दशा से ग्रसित सुग्रीव से राम जी का मिलन; मृत्यु को पानेवाले वालि के द्‌वारा राम जी की भर्त्सना और राम जी के उत्तर; व्यसनासक्त-सुग्रीव से राम-लक्ष्मण जी का सीतान्वेषण कराना; वानरों का आगमन; राम जी का हनूमान् जी पर भरोसा; अङ्गदसहित वानरों की निराशा और प्रायोपवेशन का निश्चय; हनूमान् जी द्‌वारा अङ्गद जी को समझाना; सम्पाति से वानरों को सीता जी और लङ्का का पता चलना; जाम्बवत् जी द्‌वारा हनूमान् जी को उत्तेजना; हनूमान् जी द्‌वारा समुद्रोल्लङ्घन; आराम त्याग कर, नागमाता की परीक्षा उत्तीर्ण कर, सुरसा को जीतकर हनूमान् जी का लङ्का में प्रवेश और लङ्का (राक्षसी लङ्किनी)को जीतना; सीता-अन्वेषण में हनूमान् जी की विफलता और निराशा और फिर मन को जीतना; लङ्का में सीताजी की दुर्दशा; हनूमान् जी और सीता जी का मिलन और बातचीत; हनूमान् जी के पराक्रम से रावण को नन्दीश्वर जी का याद आना; लङ्का-दहन में हनूमान् जी का सीता जी के लिये चिन्ता करना और चिन्ता-निवारण; रावण द्‌वारा विभीषण का तिरस्कार; दुबारा समुद्रोल्लङ्घन के बाद हनूमान् जी द्‌वारा राम जी को निर्देश; सीता जी के लिये चिन्तित-राम जी का समुद्र पर कोप; राम-विभीषण मिलन; राम जी का वानरों की मदद से सेतु-निर्माण; वानर-राक्षस युद्‌ध; इन्द्रजित् द्‌वारा रामलक्ष्मण जी को नागपाश से घायल करना; उनकी दशा देखकर सीता जी का दुःख; सुग्रीव-विभीषण आदि की चिंता; गरुड जी का आगमन और कष्ट-निवारण; भयङ्कर-युद्‌ध; रावण का सीता जी को छलमय रामजी का कटा सिर दिखाना और दुःखिता सीता जी का दुःख-निवारण; कुम्भकर्ण का वानरों को चौपट करना और राम जी द्‌वारा उसका वध; इन्द्रजित् का वानरसेना को माया से चौपट करना और हनूमान् जी द्‌वारा औषधीय-पर्वत लाकर सबके कष्ट का निवारण करना; मायानिर्मित सीता जी का इन्द्रजित् द्‌वारा वध देखकर राम जी का दुःख से विह्वल-स्तब्ध-क्षुब्ध होना और लक्ष्मण जी द्‌वारा राम जी को (स्नेह से) सुनाना; विभीषण जी द्‌वारा सच्चाई समझना; अत्यन्त-कुपित लक्ष्मण द्‌वारा भयानक-इन्द्रजित् का वध; सेना और पुत्र को चौपट देखकर रावण का सीतामारण के लिये उठना और सीता जी का भय; इस कृत्य से रावण का विमुख होना और युद्‌ध करना; रावण कृत लक्ष्मण-वियोग में राम जी का कोप और दुःख; हनूमान् जी का फिर से उन दोनों के लिए औषधीय-पर्वत लाना; रावण-वध; भरत से सीतारामलक्ष्मण जी का पुनर्मिलन; सीतारामराज्याभिषेक; राम जी द्‌वारा सीताजी को त्यागना और किसी-अन्य नारी को उस-तरह से न चाहना; लक्ष्मण जी का दुःख; वाल्मीकि-आश्रम में सीता जी का मायारहित होकर रामपुत्रों (लव-कुश)को जन्म देना और उनका पालन करना; राम जी का शत्रुघ्न जी को मधुरा भेजना ; राम जी का अश्वमेध-यज्ञ; राम जी का लव-कुश से अपनी कथा सुनकर अपने बच्चों को पहचानना; सीता जी का सबकुछ-त्यागकर रसातल-प्रवेश; राम जी का दुःखित होना; रामराज्य का विस्तार; रामजी का लक्ष्मणजी

को त्यागना और दुःखी होना; लक्ष्मण जी का देह-त्यागना; राम जी का सरयू में प्रवेशकर के लीला का संवरण करना और हनूमान् जी का हम सब-लोगों के लिये रुके रहना।

इस कृति का रागम् प्रायः 'नाट' है।

ये 'जगदानन्दकारक' और जगदानन्दकारक-राम धर्म,भक्ति और सत्य-ज्ञान में वृद्धि करें।

<u>भगवान् बालढुण्ढि को समर्पित</u>

Ravi Ojha
ravirameshojha@gmail.com